शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –35 -38

छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति में नाचा: परंपरा से आधुनिकता तक

डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छत्तीसगढ़)

Received– 20 June - 2026
Accepted-21 June- 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
डॉ. अपराजिता जॉय नंदी- सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छत्तीसगढ़)
DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041409
Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

सार: छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति में 'नाचा' को केवल एक लोकनाट्य-विधा के रूप में नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान के जीवंत आधार के रूप में देखता है। 'नाचा' सदियों से ग्राम्य जीवन, लोक-हास्य, सामाजिक चेतना और सामूहिक उल्लास का प्रमुख माध्यम रहा है, किंतु समय के साथ इसके स्वरूप और उद्देश्य में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देते हैं। यह शोध 'नाचा' की पारंपरिक संरचना, गुरु-चेला परंपरा, वेश-भूषा, लोक-संगीत, छत्तीसगढ़ी बोलियों की खास शैली का अध्ययन करते हुए यह भी खोजता है कि नए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों, शहरी संस्कृति और डिजिटल मंचों के प्रभाव से इसका प्रस्तुतीकरण कैसे बदलने लगा है। कहीं-कहीं यह बदलाव सहज है,तो कहीं परंपरा की मूल आत्मा को चुनौती भी देता दिखता है। इसी संदर्भ में शोध का उद्देश्य 'नाचा' के सांस्कृतिक आधार, उसकी सामाजिक भूमिका और बदलते समय में उसकी निरंतरता के प्रश्नों को गंभीरता से समझना है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि 'नाचा' के संरक्षण के लिए समुदाय,कलाकारों और नीतिगत संस्थाओं की साझा जिम्मेदारी आवश्यक है। इस शोध का निष्कर्ष छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति में 'नाचा' की केंद्रीयता को रेखांकित करते हुए इसके भविष्य स्वरूप की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द : छत्तीसगढ़, लोक-संस्कृति, नाचा, लोकनाट्य, चुनौतियाँ और संभावनाएँ |

प्रस्तावना : छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति अपने भीतर एक अत्यंत व्यापक और जीवंत संसार समेटे हुए है। यहाँ का जीवन प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव से आकार पाता है| घने जंगल, खेत-खार, नदी-नालियाँ और ऋतुचक्र न केवल लोगों के जीवन-निर्वाह से जुड़े हैं बल्कि उनकी सांस्कृतिक संवेदनाओं को भी दिशा देते रहे हैं। सामूहिकता छत्तीसगढ़ के सामाजिक व्यवहार की मूल आत्मा मानी जाती है । गाँवों में श्रम, उत्सव, गीत-नृत्य और धार्मिक अनुष्ठान सामूहिक भागीदारी पर ही टिके हुए हैं। लोकगीत, पंथी, करमा, ददरिया और पारंपरिक आस्थाएँ ये सब मिलकर एक ऐसी लोक-संस्कृतिक संरचना रचते हैं जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति केवल मनोरंजन नहीं बल्कि जीवन का स्वाभाविक विस्तार प्रतीत होती है। **"छत्तीसगढ़ी संस्कृति का उल्लास, सहजता, सौन्दर्य यहाँ के लोकनाट्य 'नाचा' में अभिव्यक्त होता है| जनरंजन की भावना से अनुप्राणित इस प्रसिद्ध रंग शैली में समाज की विसंगतियो का निरूपण मात्र नहीं होता, अपितु साथ सुर–लय-ताल से समन्वित अलंकारिक और सौन्दर्यात्मक व्यंजना भी निहित है|"**[1] इसी सांस्कृतिक भूमि में नाचा विकसित हुआ और धीरे-धीरे यह केवल एक कला नहीं बल्कि सामाजिक संवाद का माध्यम बन गया। नाचा का उद्भव छत्तीसगढ़ की मिट्टी में इतना स्वाभाविक दिखाई देता है कि यह प्रश्न स्वतः उठता है कि क्यों यह कला अन्य क्षेत्रों की तुलना में यहीं अधिक गहरे रूप में फली-फूली? इसका कारण शायद यह हो कि छत्तीसगढ़ के ग्रामीण समाज में हास-व्यंग्य, सामूहिक उल्लास और सामाजिक स्थितियों की खुली अभिव्यक्ति के लिए 'नाचा' जैसा मंच आवश्यक था। इसमें स्थानीय बोली, देह-भाषा, लोकसंगीत और दैनिक जीवन के अनुभव का ऐसा सम्मिश्रण मिलता है जो इसे छत्तीसगढ़ की विशिष्ट पहचान बनाता है।

हालाँकि इस विशिष्ट लोकनाट्य पर विभिन्न लेख, पुस्तकों और मीडिया स्रोतों में उल्लेख मिलता है, परन्तु उपलब्ध साहित्य का अवलोकन यह स्पष्ट करता है कि नाचा को छत्तीसगढ़ की व्यापक लोक-संस्कृति (जिसमें भाषा, व्यंग्य, धार्मिक विश्वास और ग्रामीण सामाजिक संरचना शामिल है) के जीवंत संदर्भ में रखकर अध्ययन करने का प्रयास बहुत कम हुआ है। अधिकांश लेख इसे केवल मनोरंजन या लोकनाट्य-विधा की सीमित परिभाषा में बाँध देते हैं, जबकि इसके समाजशास्त्रीय, नृसांस्कृतिक और सांस्कृतिक पक्षों पर व्यवस्थित शोध लगभग अनुपस्थित दिखाई देता है। विशेषकर गुरु-चेला परंपरा, कलाकारों के ज्ञान-संक्रमण, नाचा की भाषा और देह-

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –35 -38

भाषा की कलात्मक विशिष्टता तथा ग्रामीण जीवन में इसकी सामाजिक भूमिका जैसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर अकादमिक विश्लेषण की कमी स्पष्ट रूप से महसूस होती है।

आधुनिकता और तकनीक के प्रभावों से नाचा में जो प्रस्तुति-परिवर्तन आये हैं, उनका लोक-संस्कृति के संदर्भ में वैज्ञानिक अध्ययन भी अभी पूर्णरूपेण विकसित नहीं हो पाया है। साथ ही नाचा के दस्तावेजीकरण, इसकी विविध उपशैलियों के संरक्षण और भविष्य की सांस्कृतिक रणनीतियों पर शोध अत्यंत सीमित है। इस प्रकार यह शोध-अंतर यह संकेत देता है कि 'नाचा' को छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति के "केंद्र" में रखकर उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और समकालीन रूपांतरणों का समग्र व तर्कसंगत अध्ययन अब भी अपेक्षित है और यही इस शोध का मुख्य औचित्य भी बनता है। इसी कारण यह शोध नाचा को केवल 'लोकनाट्य' की श्रेणी में रखकर नहीं देखता, इसकी केंद्रीय दृष्टि यह है कि नाचा को छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति के व्यापक परिप्रेक्ष्य में पढ़ा जाए, क्योंकि इसका स्वरूप, अर्थ और महत्त्व तभी ठीक प्रकार से सामने आ सकता है। आधुनिक समय में जब बाजारवाद, शहरीकरण और तकनीकी माध्यमों ने लोककलाओं पर अनेक प्रभाव डाले हैं, तब नाचा की पारंपरिक संरचना और उसके वर्तमान स्वरूप पर शैक्षणिक स्तर पर गहन अध्ययन की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

अत: इस शोध का उद्देश्य 'नाचा' की परंपरा से लेकर उसके आधुनिक रूपों तक इसके सांस्कृतिक, सामाजिक और कलात्मक आयामों का अध्ययन करना है। विशेषकर यह जानना कि 'नाचा' का मूल स्वरूप क्या रहा, यह सामाजिक परिस्थितियों से कैसे विकसित हुआ और ग्रामीण जीवन में इसकी क्या भूमिका रही? साथ ही आधुनिकता, तकनीक और नए मीडिया मंचों ने 'नाचा' की प्रस्तुति, सामाजिक प्रभाव और उसके रूपांतरण में क्या परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इसके अतिरिक्त 'नाचा' के भविष्य को किन चुनौतियों और संभावनाओं का सामना करना पड़ सकता है, यह भी एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति और नाचा के संबंधों को एक नई, अधिक व्यवस्थित और शोधात्मक दृष्टि से देखने की चेष्टा करता है|

छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति : छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति अपने आप में एक विस्तृत सामाजिक-सांस्कृतिक संसार रचती है, जिसमें प्रकृति, श्रम और समुदाय जीवन के मूल आधार-तत्त्व के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ की बोली-बानी में जो सादगी और अपनत्व है, वह केवल भाषिक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि सामाजिक व्यवहार का हिस्सा बन जाती है। ग्राम-समुदाय की श्रम-संस्कृति, पारंपरिक आस्थाएँ और उत्सवधर्मिता मिलकर एक ऐसा वातावरण निर्मित करती हैं जहाँ सामूहिकता स्वाभाविक रूप से जीवन-व्यवहार का केंद्र बनती है। यही वे तत्त्व हैं जिन्होंने 'नाचा' के मूल स्वभाव को एक ऐसा आकार दिया जो सहज, खुला, विनोदी और मन से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। **"छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति में नाचा का एक विशिष्ठ स्थान है| लोक नृत्य करते कलाकारों के थिरकते पाँव व पारम्परिक वाद्य यंत्रो पर थिरकती उंगलियों से उपजी लोक धुनों का एक अलग हि आनंद है|"**[2] छत्तीसगढ़ी समाज में हास्य-व्यंग्य की परंपरा बहुत पुरानी है। यहाँ हँसी-ठिठोली केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक संवाद का एक रचनात्मक तरीका भी है।ग्रामीण जीवन में व्यंग्य को संबंधों को मजबूत करने, सामाजिक विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाने और जीवन की कठिनाइयों को हल्का करने के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। यही सांस्कृतिक व्यवहार 'नाचा' के भीतर भी गहराई से बस गया, जिससे इसकी अभिव्यक्ति व्यंग्यप्रधान और जीवन-उन्मुख बनती चली गई। कलाकारों की देह -भाषा, बोली का प्रयोग और चरित्रों की विनोदी प्रस्तुति इसी परंपरा की देन है। **"छत्तीसगढ़ की सार्वजनिक लोकरंग विधा नाचा का जन्म एवं विकास पूर्णत: ग्रामीण परिवेश में हुआ है| इनका इतिहास भी अन्य लोककलाओ की भांति रोचक एवं जिज्ञासावर्धक है|"**[3] लोक-संस्कृति में उपलब्ध अनौपचारिक मंच (जैसे चौपाल, मड़ई, मेलों और फसल-आधारित सार्वजनिक आयोजन) नाचा के विकास हेतु निर्णायक सिद्ध हुए। चौपाल की खुली संरचना ने कलाकार और समुदाय के बीच प्रत्यक्ष संवाद की परंपरा को मजबूती दी, वहीं मड़ई और मेलों ने इसे सामूहिक उत्सव का अंग बना दिया। इन मंचीय परंपराओं ने नाचा को केवल नाट्य-कला नहीं बल्कि सामाजिक सहभागिता का जीवंत माध्यम बनाया। परिणामस्वरूप, नाचा लोक-संस्कृति की उसी धारा में स्थिर हुआ जहाँ कला, जीवन और समुदाय एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं।

'नाचा' का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास: "छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्र में दो पूर्ण विकसित नाट्य स्वरुप विद्यमान है- एक रहस और दूसरा नाचा|"[4] नाचा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ है और इसे केवल लोकनाट्य की श्रेणी में देखना पर्याप्त नहीं है। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार नाचा का उद्भव ग्रामीण जीवन की हास्य-व्यंग्य आधारित परंपरा से हुआ, जिसमें दैनिक जीवन की कठिनाइयाँ, सामाजिक विसंगतियाँ और ग्राम्य अनुभव मंच पर जीवंत रूप में प्रस्तुत होते थे। **"सामाजिक कुरीतियों पर विषमता, छुआछूत पर ढोंग, पाखंड पर शोषण और राजनीतिके दोहरे चरित्र पर तीखी चोट करने की नाचा कलाकारों की क्षमता तो केवल नाचा देखकर ही समझा जा सकता है|"**[5] मध्य प्रदेश पुनर्गठन से पूर्व के सांस्कृतिक परिवेश गांव के मेले, हाट-बाज़ार और फसल-उत्सव ने 'नाचा' के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई, जिससे यह मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक चेतना का माध्यम भी बन गया। 'नाचा' ने समाज की रोजमर्रा की कहानियों, हास्य प्रसंगों और संघर्षों को मंचित किया और इसके माध्यम से ग्रामीण समाज में समानता, सामूहिक आनंद और सामाजिक संवाद को बढ़ावा मिला।

हालांकि इसमें स्त्री पात्रों की भूमिकाओं को पुरुष कलाकार निभाते हैं, जो समय के अनुसार कई सामाजिक और नृसांस्कृतिक प्रश्न भी खड़े करता है, परंतु यह दर्शाता है कि नाचा केवल कला नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्य का दर्पण भी है। नाचा के दो प्रमुख रूप विकसित हुए—गठुला नाचा, जो हास्यप्रधान और व्यंग्यमुखी है और सांगीत, जो संगीत, नृत्य और लोकगीत पर आधारित है। इसमें प्रयुक्त भाषा सहज और लोक रूपी होती है, संवाद शैली में व्यंग्य और हास्य झलकते हैं और पंच तत्वों, हाव-भाव और नृत्य के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं। गुरु-चेला परंपरा नाचा का एक महत्वपूर्ण आयाम है, क्योंकि यह केवल अभिनय और नृत्य की शिक्षा नहीं देती, बल्कि लोकसाहित्य, व्यंग्य, सामाजिक समझ और कलात्मक अनुभव का हस्तांतरण भी करती है। इस प्रकार 'नाचा' छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति का न केवल प्रदर्शन है, बल्कि यह एक जीवंत शिक्षा, सामाजिक चेतना

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –35 -38

और सांस्कृतिक अनुशासन का माध्यम भी बनकर लोकजीवन में अपनी केंद्रीय भूमिका बनाए रखता है।

छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति में 'नाचा' का सांस्कृतिक महत्व : छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति में 'नाचा' का सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक गहन और बहुआयामी है, क्योंकि यह केवल कला का प्रदर्शन नहीं बल्कि सामाजिक, ऐतिहासिक और शैक्षणिक अनुभव का भी माध्यम है। 'नाचा' छत्तीसगढ़ी पहचान को भाषा, हावभाव, संगीत और सामाजिक व्यवहार के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और इसी के जरिए लोकजीवन की विशिष्टताएँ दर्शकों तक पहुँचती हैं। इसके मंच पर प्रस्तुत कथाएँ और पात्र लोककथाओं, देवी-देवताओं की कथाओं और समाज की ऐतिहासिक स्मृतियों को संरक्षित करने का कार्य भी करती हैं, जिससे यह पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर की जीवंत धारा बनकर रह जाता है। साथ ही 'नाचा' व्यंग्य के माध्यम से समाज की कमियों, अनैतिकताओं और असमानताओं पर टिप्पणियाँ करता है, जो सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य 'सामाजिक नियंत्रण' का साधन बन जाती हैं। यह कलाकार और दर्शक दोनों के लिए चिंतन का अवसर प्रस्तुत करता है और सामूहिक चेतना को सक्रिय बनाता है। 'नाचा' का प्रभाव केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, यह लोक-शिक्षा और जन-जागरण का भी माध्यम है। स्वास्थ्य, सामाजिक बुराइयाँ, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, लैंगिक असमानताएँ और अन्य सामाजिक मुद्दे इसकी सरल भाषा, गीत-संगीत और दृश्य प्रस्तुति के माध्यम से ग्रामीण समाज में पहुँचते हैं, जिससे संदेश गहराई से समाहित होता है। **"छत्तीसगढ़ की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला 'नाचा' लोकजीवन में लोकशक्ति के प्रकाश से चमकता हुआ एक ऐसा अनगढ़ हीरा है, जिसे बहुत अधिक तराशने की आवश्यकता नहीं है।"**[6] इस प्रकार 'नाचा' छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति का वह केंद्रीय स्तंभ है, जो भाषा, संगीत, हावभाव और सामाजिक संवाद के माध्यम से न केवल सांस्कृतिक पहचान को उजागर करता है बल्कि लोक-स्मृतियों के संरक्षण, सामाजिक आलोचना और जन-जागरूकता में भी गहन योगदान देता है।

नाचा पर आधुनिकता का प्रभाव: आधुनिकता ने छत्तीसगढ़ी नाचा के स्वरूप, प्रस्तुति और सामाजिक संदर्भ में अनेक परिवर्तन लाए हैं। तकनीक और मीडिया के प्रभाव से पारंपरिक नाचा की प्रस्तुति में बदलाव स्पष्ट दिखाई देता है—माइकमाइक्स, रिकॉर्डेड म्यूजिक, मंचीय सज्जा और प्रकाश व्यवस्था ने इसके पारंपरिक अनुभव को नया रूप दिया है। साथ ही ग्रामीण मंचों से बढ़कर 'नाचा' अब शहरों के सांस्कृतिक आयोजनों और समारोहों में भी प्रस्तुत होने लगा है और सोशल मीडिया के युग में छोटे-छोटे वीडियो क्लिपों में इसकी नई उपस्थिति देखी जाती है। विषय-वस्तु और संवाद शैली में भी परिवर्तन हुए हैं। पुराने पारंपरिक कथानकों के साथ अब समकालीन मुद्दे जैसे बेरोज़गारी, प्रशासनिक व्यवस्था, डिजिटल दुनिया और राजनीति शामिल हो गए हैं। भाषा में छत्तीसगढ़ी, हिंदी और आधुनिक स्लैंग के मिश्रण से संवाद शैली में नवीनता तो आई है, लेकिन कभी-कभी इसकी शास्त्रीयता और संयम पर प्रश्न भी उठते हैं। आधुनिक नाचा में मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसे विषयों पर व्यंग्य दर्शक को सीधे वर्तमान समाज से जोड़ता है और यह लोक-संस्कृति के परिवर्तन का प्रत्यक्ष दर्पण बन गया है। कलाकारों की स्थिति में अस्थिरता है, 'नाचा' उनके लिए रोज़गार का माध्यम भी है और चुनौती भी, क्योंकि सरकारी संरक्षण योजनाएँ सीमित हैं और पर्याप्त नहीं मानी जाती। युवा पीढ़ी में रुचि और उदासीनता का मिश्रित वातावरण है, जिससे कलाकारों और विधा के भविष्य पर असर पड़ता है। आधुनिकता ने नाचा और उसकी मूल लोक-संस्कृति के बीच कुछ दूरी पैदा की है, लेकिन साथ ही राज्योत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम और डिजिटल माध्यमों ने इसे नई पहचान और पुनःसंलग्नता का अवसर भी प्रदान किया है। इस प्रकार 'नाचा' आज अपनी परंपरा और आधुनिक परिवर्तनों के मध्य एक संतुलन बनाकर छत्तीसगढ़ी लोक-संस्कृति का जीवंत प्रतिबिंब बनकर अपने अस्तित्व को बचाए रखा है।

छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति के संदर्भ में नाचा की चुनौतियाँ और संभावनाएँ: जहा एक ओर 'छत्तीसगढ़ी नाचा' आज अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जो इसके अस्तित्व और लोक-संस्कृति में केंद्रीय भूमिका पर प्रभाव डाल रही हैं। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि ग्रामीण समाज में लोक-संस्कृति से दूरी बढ़ती जा रही है और युवा पीढ़ी का नाचा और इसके पारंपरिक मंचों के प्रति झुकाव कम होता जा रहा है। पारंपरिक गुरु-चेला अनुशासन में गिरावट और कलाकारों के प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त संस्थानों का अभाव इसके सृजन और प्रस्तुति की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है। बाज़ारीकरण के दबाव ने कभी-कभी फूहड़ता और गैर-प्रामाणिक सामग्री को जन्म दिया है, क्योंकि मनोरंजन और व्यावसायिक दबाव कलाकारों और आयोजकों पर लगातार रहते हैं। आर्थिक अस्थिरता कलाकारों के लिए लगातार चिंता का विषय है, जिससे यह पेशा उनके जीवनयापन का स्थायी माध्यम बनाना कठिन होता जा रहा है। मंच-संरचना का असंगत विकास और आधुनिक तकनीक का आंशिक रूप से अपर्याप्त प्रयोग नाचा की पारंपरिक आत्मा और प्रस्तुति शैली के बीच तनाव पैदा करता है। इसके अतिरिक्त, युवा पीढ़ी का मोबाइल, इंटरनेट और अन्य आधुनिक मनोरंजन माध्यमों की ओर अधिक झुकाव नाचा की निरंतरता और लोक-संस्कृति में उसकी सक्रिय भागीदारी के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करता है। इन सभी चुनौतियों के बीच यह स्पष्ट होता है कि 'नाचा' को केवल कला के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थान के रूप में संरक्षित करने और पुनःजीवित करने की आवश्यकता है, ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक अपनी प्रामाणिकता और सांस्कृतिक मूल्य बनाए रख सके।

वही दूसरी ओर 'छत्तीसगढ़ी नाचा' के लिए भविष्य में कई सकारात्मक संभावनाएँ भी दिखाई देती हैं, जो इसे न केवल जीवित रखने बल्कि नई पहचान दिलाने में सहायक हो सकती हैं। सबसे पहले, लोक-संस्कृति आधारित पर्यटन के विकास में 'नाचा' को राज्य की सांस्कृतिक पहचान के रूप में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रसारित किया जा सकता है, जिससे कलाकारों को आर्थिक अवसर भी मिल सकते हैं और लोककला का संरक्षण भी सुनिश्चित होगा। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में लोकनाट्य अध्ययन के नए अवसर 'नाचा' को अकादमिक दृष्टि से भी सशक्त बना सकते हैं, जिससे इसकी सांस्कृतिक महत्ता और ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण मजबूत होगा। 'नाचा' की एक अद्भुत क्षमता यह है कि यह समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकता है, जिससे यह आज भी ग्रामीण और शहरी दर्शकों के बीच प्रासंगिक बना हुआ है। डिजिटल मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म के माध्यम से नाचा का पुनर्जीवन संभव है, क्योंकि यह परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर नए दर्शक वर्ग तक पहुँच सकता है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –35 -38

इसके अतिरिक्त, फिल्मों, नाटकों और वेब-संस्कृति में नाचा शैली का प्रयोग इसे नई रचनात्मक दिशा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अवसर दे सकता है। इन सभी संभावनाओं के माध्यम से 'नाचा' केवल लोक-संस्कृति का संरक्षण नहीं करता बल्कि सामाजिक संवाद, शिक्षा और कलात्मक नवाचार में भी अपनी स्थायी उपस्थिति बनाए रखने की दिशा में अग्रसर रहता है।

निष्कर्ष : छत्तीसगढ़ी 'नाचा' केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक आत्मा और लोकधरोहर का प्रतीक है और यही बात इस शोध के माध्यम से स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है। 'नाचा' में लोकजीवन के दुख-सुख, सामाजिक संरचना, आस्था, सामूहिकता और हास्य-व्यंग्य की अनूठी शैली समाहित है, जो इसे केवल कला नहीं बल्कि सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक मूल्य का वाहक बनाती है। परंपरा से आधुनिकता तक 'नाचा' ने स्वयं को बदला जरूर है| मंचीय सज्जा, संगीत, तकनीक और समकालीन विषयों के समावेश से इसकी प्रस्तुति आधुनिक जरुर हुई है, लेकिन इसकी आत्मा, चुटीली भाषा और लोकस्मृतियाँ आज भी जीवित हैं। आधुनिकता ने इसके स्वरूप में परिवर्तन किए है, पर इसकी सांस्कृतिक जड़ें इतनी गहरी हैं कि यह आज भी समाज में प्रासंगिकता बनाए हुए है। भविष्य में लोक-संस्कृति के संरक्षण के साथ नाचा की परंपरा को सशक्त रूप से आगे बढ़ाया जा सकता है और उचित प्रशिक्षण, संरक्षण और सांस्कृतिक संवर्धन के माध्यम से यह कला आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जीवंत रह सकती है।

दाऊ मंदराजी, ठाकुर राम, फिदाबाई मरकाम, गोविन्द राम निर्मलकर, डोमार सिंह कुवंर, लालुराम साहू, मदन निषाद, जगमोहन, शिवदयाल आदि ने विलुप्त होते नाचा नृत्य को ग्रामीण क्षेत्र से शहरी, शहरी क्षेत्र से राज्यस्तरीय, राज्यस्तरीय से राष्ट्रीय और राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक ख्याति दिलाई है| उन कलाकारों के मेहनत और उनके योगदानो को नाचा नृत्य के माध्यम से संजोकर रखने के लिए आज संरक्षण की आवश्यकता है, अन्यथा आने वाली पीढ़ी के लिए नाचा नृत्य केवल पाठ्यक्रम का एक अध्याय बनकर ही रह जायेगा| इसलिए शोधार्थी के रूप में यह समझना आवश्यक है कि नाचा का अध्ययन केवल कला का अध्ययन नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ी समाज के सांस्कृतिक ताने-बाने, लोकजीवन और सामूहिक चेतना की व्याख्या भी है।वर्तमान चुनौतियों के बावजूद, नाचा अपनी सांस्कृतिक महत्ता और अनूठी लोकस्मृति के माध्यम से भविष्य में भी एक जीवंत, शिक्षाप्रद और मनोरंजक माध्यम के रूप में विकसित होने की क्षमता रखता है। अंतत: नाचा छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान, लोकस्मृतियों और सामूहिक जीवन का महत्वपूर्ण वाहक है। आधुनिक बदलावों के बीच भी इसकी जड़ें गहरी हैं, जो इसे आज के समय में भी प्रासंगिक बनाए रखती हैं। चुनौतियों के बावजूद नाचा में संरक्षण और संवर्धन की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं। इसलिए नाचा का अध्ययन केवल कला नहीं, बल्कि पूरे समाज की सांस्कृतिक आत्मा को समझने का माध्यम भी है।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची: -

1. मानस, जयप्रकाश (2011), छतीसगढ़ की लोककथाए, हर्ष पब्लिकेशन्स, दिल्ली
2. महावीर, अग्रवाल (2011), छतीसगढ़ लोक नाट्य : नाचा, श्री प्रकाशन, छ.ग.
3. केशरवानी, अश्विनी (2003), छतीसगढ़ की नाट्य परम्परा, चौमासा पत्रिका, अंक 73
4. महावार, निरंजन (2014), लोक रंग: छतीसगढ़, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. महावीर, अग्रवाल (1999), लोक संस्कृति के आयाम एवं परिपेक्ष्य, श्री प्रकाशन, छ.ग.
6. महावीर, अग्रवाल (2011), छतीसगढ़ लोक नाट्य : नाचा, श्री प्रकाशन, छ.ग.
7. पाठक, डॉ. विनय कुमार (1983), छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन, भावना प्रकाशन, बिलासपुर

———000———